ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

डॉ0 लोहिया के दृष्टिकोण में आर्थिक समाजवाद

[1]डॉ0 हेमन्त कुमार सिंह
[1]एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज बाराबंकी, उ0प्र0

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

डॉ0 राम मनोहर लोहिया (1910–1967) भारत के समाजवादी आन्दोलन के अग्रणी नेता, स्वतंत्रता आन्दोलन के महान नायक तथा 'विद्रोही प्रवृत्ति के बौद्धिक राजनीतिज्ञ' के रूप में जाने जाते हैं। लोहिया स्वतंत्रता पूर्व गठित (1934) कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख संस्थापकों में से एक थे, जो प्रमुख संगठन कांग्रेस के अन्तर्गत ही कार्यरत था। 1948 में यह कांग्रेस से अलग हो गया। कालान्तर यह प्रजा समाजवादी दल, फिर संयुक्त समाजवादी दल तथा अन्ततः समाजवादी दल के रूप में पहचाना गया। लोहिया सक्रिय राजनीतिज्ञ तथा बुद्धिजीवी थे। उनके विचारों की छवि उनके द्वारा लिखित रचनाओं में दृष्टिगोचर होती है।

मुख्य शब्द – डॉ0 लोहिया के विचार, दृष्टिकोण, आर्थिक समाजवाद, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, आर्थिक असमानता।

प्रस्तावना

अर्थशास्त्री के रूप में उनकी स्थिति में उनका प्रतिफलन एक राजनीतिक राजनेता के रूप में हुआ है। आर्थिक विषयों पर उन्होंने तभी लिखा जब राजनीतिक गतिविधियों का प्राबल्य उनके अर्थशास्त्र के अध्ययन पर हावी रहा। अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीयकरण में इनका पूर्ण विश्वास था। इनके मतानुसार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक असमानताओं को दूर करना मुश्किल है। बेरोजगारी, श्रमिकों के प्रति अमानुषिक व्यवहार, सुदीर्घ कार्यावधि, कार्य–स्थल की शोचनीय दशा तथा दमनकारी उपाय–ये सब पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हैं। इन्होंने उद्योगों के राजकीय स्वामित्व तथा राजकीय प्रबन्धन का पक्ष पोषण किया और उन अति स्पष्ट सामाजिक तथा आर्थिक असमानताओं को दूर करने की भी बात कही, जो पूंजीवादी प्रणाली में अन्तर्भूत है। वास्तव में वे क्रमिक चरणों में समाजवाद के विकास को पसन्द करते थे।

इन्होंने आयोजन को अपनाने तथा शोषण को समाप्त करने पर बल दिया। वे अनुभव करते थे कि औद्योगिक सौहार्द, श्रम कल्याण तथा अनुकूल औद्योगिक सम्बन्धों का ही परिणाम हो सकता है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

यद्यपि साम्यवादियों की भाँति ये पूंजीवादियों को उखाड़ देने के पक्ष में नहीं थे। तथापि उनके प्रति कठोर रवैया रखने में संकोच नहीं करते थे और ये सोवियत संघ पद्धति के समान कृषि के सामूहिकीकरण के समर्थक थे। किन्तु इन्होंने पूंजीवादियों को निकालने के लिए मार्क्स द्वारा सुझाए हिंसात्मक उपायों की भर्त्सना की। उन्होंने शांतिपूर्ण संवैधानिक आन्दोलन की प्रभाविता में अपनी पूर्ण आस्था प्रकट की।

उन्होंने गांधी एवं मार्क्स दोनों को मिलाकर एक समुचित इकाई का स्वरूप प्रदान करने का प्रयत्न किया। उनके शब्दों में समाजवाद को गाँधीवाद या मार्क्सवाद कहने की आवश्यकता नहीं है और न ही उसे गांधी या मार्क्सवादी विरोधी कहा जाना चाहिए। ऐसा करना चिन्तन को भुलाकर सुन्दर शब्दों को अपनाना है। वास्तव में उन्होंने समाजवाद के गाँधीवादी तथा मार्क्सवादी विवरण को 'विलक्षण रूप से रक्तहीन सिद्धांत' कहा। डॉ0 लोहिया ने कहा, ''समाज को हम उधार की साँसों पर जीवित नही रखना चाहते। बहुत समय तक हमनें साम्यवाद से आर्थिक उद्देश्य उधार लिए हैं। जब तक समाजवाद उस उधार वाक्य, जिस पर पूंजीवाद और साम्यवाद खड़े हैं, निरस्त कर उससे स्वयं मुक्त नहीं होता, इसके स्थान पर सामान्य और आर्थिक उद्देश्यों में सुमेलपूर्ण सामंजस्य स्थापित नहीं करता, तब तक वह एक अपरिपक्व तर्कहीन सिद्धान्त ही रहेगा।'' कठोर रूढ़िवाद से मुक्ति का उन्होंने परामर्श दिया। विचारों को वे राजनीतिक उर्जा का केन्द्र बनाना चाहते थे।

उन्होंने मार्क्स के पूंजीवाद के विश्लेषण को अपनाया, जो उन दिनों में इंगलैण्ड तथा जर्मनी में लागू किया जाता था और मार्क्स द्वारा निजी सम्पत्ति की भर्त्सना करने की सराहना की। उन्होंने मार्क्स के तार्किक भौतिकवाद को स्वीकार किया। लोहिया ने मार्क्स के श्रेणी–संघर्ष के सिद्धान्त को भी नहीं माना। उन्होंने इस सिद्धान्त को अपूर्ण तथा पूर्ण रूप में गलत माना है। उनके मातानुसार श्रेणी संघर्ष का साम्यवादी सिद्धान्त वंचना, विश्वासघात तथा सांस्कृतिककरण का सिद्धान्त है। पूंजीवाद के भ्रान्तिपूर्ण विश्लेषण पर यह आधृत है। पूंजीवाद वर्ग का नाश करने के इच्छुक साम्यवादी वास्तव में उन्हीं की उत्पादन पद्धति का अनुकरण करते हैं। समाजवादी ये दोनों कार्य तथा करते है।

उनके मतानुसार श्रेणियों का जाति रूप में, जाति का वर्ग रूप में, बदल कर मानवता के सामने आते रहना वास्तव में प्रगति विरोधी है। उनकी राय है कि ''मानवता श्रेणियों में अदला–बदली ही लगी रही है''। सवर्ण जातियों तथा ढीले संगठन वाली श्रेणियों के बीच में निरंतर संघर्ष चलता रहा है। यदि जातियाँ गतिहीन जड़ता तथा परम्परासिद्ध रूढ़िवादी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है, तो श्रेणियाँ सामाजिक गतिहीन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है। मानवीय इतिहास, जातियों तथा श्रेणियों

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

के आन्तरिक आन्दोलन का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। डॉ0 वर्मा के शब्दों में, ''लोहिया की, श्रेणियों तथा जातियों के बीच संघर्ष की धारणा केवल परेटो के पट्टेदारों में भूमि के हितों जो कि समूह की दृढ़ता के अवशेषों का प्रतिनिधित्व करते हैं और धनवानों के हितों, जो संयोजन के अवशेषों का प्रतिनिधित्व करते हैं, के बीच में संघर्ष के सिद्धान्त का ही एक रूप है।''

डॉ0 लोहिया समर्पित बहुलवादी लास्की के बहुलवाद की तरह जनाधिकारों के संरक्षण के समर्थक थे। उन्होंने संघर्ष के लिए हिंसात्मक उपायों के स्थान पर अहिंसात्मक साधनों का समर्थन करते हुए फावड़ा (कर्मशीलता का प्रतीक), मत (जनतंत्र का परम्परागत प्रतीक) तथा जेलों (बुराई का प्रतिरोध उपाय) की महत्ता पर बल दिया तथा सत्याग्रह का समर्थन किया। लोहिया ने प्रजातंत्र तथा समाजवाद का लक्ष्य उच्च जीवन स्तर की स्थापना के स्थान पर समुचित (सम्मानपूर्ण) जीवन स्तर बताया है। उन्होंने विश्वस्तर पर समतावदी व्यवस्था स्थापित करने के लिए विश्वसंसद की स्थापना का भी पक्ष लिया। विश्व शान्ति स्थापित करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विकास में यह कारगर सिद्ध होगी।

वह मार्क्सवाद तथा गाँधीवाद दोनों से प्रभावित थे, किन्तु दोनों ही विचारधाराओं का अन्धानुकरण न करते हुए उन्होंने एक तीसरा मार्ग खोजा, जो समाजवाद के नाम से जाना जाता है। लोहिया का मत था कि एशियाई संदर्भ पूंजीवाद व साम्यवाद दोनों ही अनुपयुक्त विचारधाराएं हैं। उनका 'लोकतांत्रिक समाजवाद' मार्क्सवाद के आर्थिक लक्ष्यों (आर्थिक विकेन्द्रीकरण) को गाँधीवादी उपायों (राजनीतिक विकेन्द्रीकरण) द्वारा प्राप्त करने का एक लक्ष्य है। वे छोटी मशीनों व लघु उद्योगों का समर्थन करते है, क्योंकि बड़े उद्योगों को वह आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण का कारण मानते हैं। उन्होंने उद्योगों, बैंको तथा बीमा कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण का भी पक्ष लिया, क्योंकि संसाधनों तथा उत्पादन–साधनों पर निजी स्वामित्व का नियंत्रण ही असामनता का मूल करण है।

उन्होंने जमींदारी–उन्मूलन व कृषि–भूमि पुनर्वितरण का भी समर्थन किया। वह जाति–प्रथा का उन्मूलन तथा आरक्षण–नीति का क्रियान्वयन चाहते थे। उन्होंने धार्मिक सिद्धांतों तथा राजनीति का पृथक रखने को कहा, क्योंकि इनका सम्मिश्रण साम्प्रदायिकता को जन्म देता है। वह बहुलवादियों की तरह सत्ता के केन्द्रीकरण के विरूद्ध थे।

उनका मानना है कि एक समाज में तब तक न्याय, मानवीय महत्व, भ्रातृत्व नैतिकता, स्वतन्त्रता तथा सार्वभौमिक कल्याण में वृद्धि नहीं हो सकती, जब तक व्यक्तियों एवं राष्ट्रों के मध्य समता नहीं होगी। वह कहते हैं कि असमानता अन्तरों को जन्म देती है। बीसवीं शताब्दी में व्यक्ति ने असमानता एवं अन्याय के विरूद्ध संघर्ष नहीं किया। सबसे पहले गरीबी और अमीरी के फर्क से जो अन्याय

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

निकलते हैं, उनको लें, यही अन्याय की जड़ है। कुछ पुराने जमाने को छोड़ दे तो अमीरी–गरीबी हमेशा से रही है और कुछ रूपों में कभी–कभी किन्हीं देशों में गरीबों को अमीरों के खिलाफ उठना भी हुआ है। लेकिन इस बार गरीबी–अमीरी की लड़ाई में बराबरी की भावना बहुत जोरों के साथ पनपी है। लोहिया मानते हैं कि आदमियों में बराबरी की थोड़ी बहुत प्राकृतिक भावना तो है जो कुछ की माने तो छोटी–मोटी बातों का सीधा सा जवाब हो जाता है। उदाहरण–लोग कह दिया करते हैं कि पाँचों उंगलियाँ क्या बराबर हैं। या फिर नदियों को कभी देखने जाओ तो पता चलता है कि कृष्णा नदी एक सेकण्ड में 1 करोड़ 10 लाख घन फीट पानी बहा देती है और गर्मी के दिनों में वह सिर्फ 500 घन फिट पानी बहाती है। इस तरह के कई उदाहरण लोग दे दिया करते हैं। कि इतनी विषमता है और विषमता ही प्रकृति का नियम है, न कि समता।

इस पर लोहिया कहते हैं कि प्रकृति का जो भी नियम हो, मनुष्य का नियम 'समता' ही होना चाहिए। वे यह जानते हैं कि मानव में दूसरी विपरीत भावनाएँ भी मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, मानव चाहते हैं कि समाज का ऐसा संगठन हो जिसमें हर एक आदमी की जगह निश्चित हो, ताकि उसमें उतार–चढ़ाव का जोखम न हो। यही बात लोगों को काफी पसन्द आयी है, क्योंकि सभी आदमी किसी न किसी के ऊपर होता है, जैसे–हिन्दुस्तान के समाज में बहुत दबे हुए लोगों को भी प्रसन्नता इस बात की रहती है कि उनके नीचे भी कोई है। समाज का गठन ऊँच–नीच की सीढ़ी के हिसाब से बन जाता है, और हिन्दुस्तान जैसे समाज में तो 10 लाख सीढ़ियाँ होंगी, जैसे की आमदनी के हिसाब से भी, और समाज में सम्मान के हिसाब से भी। डॉ0 लोहिया कहते हैं, कि गैरबराबरी खाली बड़ों और छोटों में नहीं है, बल्कि मामूली स्तर के भी जो लोग हैं, उनमें भी बहुत गैरबराबरी है। लोहिया ये नहीं कहते कि कोई ऐसा संसार बन पायेगा जिसमें पूर्ण बराबरी होगी लेकिन इसको हासिल करने के लिए प्रयास तो किये ही जा सकते है।

लोहिया का मानना है कि आज पैसे के मामले में कितनी जबरदस्त राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर–बराबरी है, उसकी मोटी–मोटी बातें एक धागे में पिरोकर अगर अपने दिमाग में रखें, तो अच्छा होगा। जो सम्प्रभु देश हैं और जो दबे हुए देश हैं उसमें आमदनी का जबरदस्त फर्क है। उसी तरह से दिमागी फर्क यह है कि यूरोप का साधारण से साधारण आदमी संसार की जो भी जरूरी चीजें हैं उनके बारे में हमारे देश के पढ़े लिखे आदमियों से अच्छे होते हैं, क्योंकि उनको अभ्यास है, वे जिस समाज में फलते–फूलते हैं उस वातावरण की चीजों को वह सूंघ सा लेते हैं उसके साथ वे जीते है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

लोहिया ने कुटीर उद्योगों के पुररूत्थान, छोटी मशीनों के प्रयोग तथा कम से कम पूंजी लगाकर अधिक से अधिक श्रम का प्रयोग करके विकेन्द्रीकरण अर्थ–व्यवस्था कायम करने पर बल दिया। वे भारी संयंत्रों के विरूद्ध नहीं थे परन्तु उनका बल लघु स्तरीय उद्योगों पर था। उनका मानना था कि भारी संयंत्र वार्षिक रूप से एक मिलियन व्यक्तियों के विरूद्ध केवल दस को ही सेवायोजन उपलब्ध करायेगा।

लोहिया कहते हैं कि केवल राजगारी कह देने से काम नहीं चलेगाा, राजगारी ऐसी हो कि पैदावार करीब–करीब बराबर हो, यह मानवीय सिद्धान्त है। हिन्दुस्तान जैसे गिरे हुए देश में आदमी के द्वारा यह सिद्धान्त निकले, यह एक अलग बात है, लेकिन इसका रूप मानवीय है। जैसे 'एडम स्थिम' के श्रम–विभाजन का रूप मानवीय था, चाहे वक्ती तौर पर वे इंग्लिस्तान को मदद देते हों। चाहे कीन्स का सिद्धान्त हो कि सम्पूर्ण राजगारी के आधार पर ही अन्तर्राष्ट्रीय श्रम–विभाजन सबके लिए फायदेमंद हो सकती है, यह सिद्धान्त मानवीय था, लेकिन अंग्रेजों को फायदा देता था। इसी प्रकार यह सिद्धान्त कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तभी सबके लिए लाभदायक होगा, जब हर एक देश में मजदूरी की पैदावार करीब–करीब बराबर हो, न कि रूपये के हिसाब से, बल्कि कितने घण्टे की मजदूरी किस देश में हुई। आजकल इस बात की बहुत ज्यादा चर्चा हो रही है कि हमारे यहाँ घरेलू उद्योग–धंधे जैसे बनारसी साड़ी या दरी या कालीन या हाथ–करघे के बढ़िया–बढ़िया कपड़े गोरे लोग खरीद रहे हैं और हमारा व्यापार खूब बढ़ सकता है। लोहिया पहले ही कह चुके थे कि अब जो संसार बनने वाला है, उसमें शायद यही होगा कि यूरोप के लोग बड़ी–बड़ी मशीनों की चीजें हमकों बेचेंगे जिसमें 2 घण्टे की मेहनत से उतना पैदा होगा जितना यहाँ 10 घण्टे की मेहनत से पैदा होता है। लोग बड़े खुश हो रह हैं। कि हमारा व्यापार बढ़ रहा है, लेकिन क्या खाक पत्थर बढ़ रहा है। यह तो 10 घण्टे की मेहनत का या 15 घण्टे की मेहनत का विनिमय एक घण्टे की मेहनत से हो रहा है।

डॉ0 लोहिया मात्र एक राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, बल्कि स्वतंत्र विचार वाले दार्शनिक भी थे। स्त्रियों की स्थिति, आदिवासी, पिछड़े वर्ग की स्थिति सुधारने के लिए वे प्रयत्नशील रहे। वे एक अर्थशास्त्री थे, जिनके पास अविकसित देश की उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ थी। इन्होंने समाज के आर्थिक एवं सामान्य उद्देश्यों को जानने का तथा उन्हें सद्भाव की अवस्था में एकीकृत करने का हमेशा प्रयास किया।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

- ओंकार, शरद, लोहिया एक प्रमाणित जीवनी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977, पृ0 37.
- ओंकार, शरद, लोहिया के विचार लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 19190, पृ0 19.
- ओम प्रकाशन दीपक, ''डेवलपमेण्ट ऑफ लोहिया थॉट'' मैनकाइन्ड वाल्यूम–19 मार्च–अप्रैल, 1968 पृ0 68.
- लोहिया राममनोहर मार्क्स गांधी एण्ड सोशलिज्म, राममनोहर लोहिया समता विद्यालय न्याय (सेकेण्ड एडीशन) हैदराबाद 1978, पृ0 387. वही पृ0, 289,.
- ओंकार, शरद लोहिया के विचार, पूर्वोद्धत, पृ0 19.
- लोहिया, राममनोहर, दि कास्ट सिस्टम राम मनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास, हैदराबाद, 1964, पृ0 133.
- वर्मा, लक्ष्मीकान्त (1991), समाजवादी दर्शन और डॉ0 लोहिया, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0 लखनऊ पृ0 89.
- लोहिया राममनोहर मार्क्स, गांधी एण्ड सोशलिज्म पूर्वोद्धत, पृ0 288.
- गुप्त, विश्वप्रकाश तथा गुप्त, मोहिनी राम मनोहर लाहिया : व्यक्ति और विचार, सुधा प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृ0 17.
- ओम प्रकाश दीपक, ''डेवलपेण्ट ऑफ लोहियाज थॉट'' पूर्वोद्धत, पृ0 59.
- लोहिया डॉ0 राममनोहर सप्तक्रान्ति, लोहिया विचार प्रकाशन कानपुर, 1990, पृ0 12.
- ओंकार, शरद लोहिया विचार, पूर्वोद्धत, पृ0 16.
- लोहिया डॉ0 राममनोहर स्प्तक्रान्ति, पूर्वोद्धत, पृ0 13.
- लोहिया राममनोहर, मार्क्स, गांधी एण्ड सोश्लिज्म पूर्वोद्धत, पृ0 326.
- लोहिया डॉ0 राममनोहर, सप्तक्रान्ति, पूर्वोद्धत, पृ0 16.